Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मनुष्य जीवन में अध्यात्म की प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. मंजुला निंगवाल*

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – आज मनुष्य अवसाद, तनाव, मानसिक शान्ति, मानसिक संतुलन, भौतिक संसाधनों का अत्यधिक लालच आदि से ग्रसित हो चुका है। वह सब कुछ तुरंत पा लेना चाहता है। आज के समाज में मानवीय मूल्यों का लोप हुआ है।वह रिश्ते नातों को ताक पर रख कुचक्र, विडम्बनाओं में फंसता जा रहा है। यह सब अध्यात्म से दूर जाने का ही परिणाम है। अध्यात्म मनुष्य के कर्म को परिष्कृत करने का कार्य करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में मनुष्य के जीवन में अध्यात्म की प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – अवसाद, भौतिक संसाधन, अध्यात्म, मानवीय मूल्य।

प्रस्तावना – अध्यात्म शब्द का अर्थ है अधि आत्म अर्थात् आत्मा की ओर झुकाव आत्म परिष्कार की साधना का नाम ही अध्यात्म है। किंतु मनुष्य मायावी संसार में सब कुछ भूल गया है । आत्म परिष्कार के माध्यम से मनुष्य जाति पाति, प्रांत, भाषा द्वेष से ऊपर उठकर एक होने का प्रयत्न तथा सद्भाव स्थापित कर सकता है। जब मनुष्य के आत्म का परिष्कार होता है तो वह घृणा, क्रोध, निर्दयता तथा वैमनस्य को त्याग कर प्रेममय और करूणामय हो जाता है। मनुष्य विज्ञान के माध्यम से प्रकृति पर विजय पाना चाहता है । यह सुविधाजनक चीजों की सृष्टि ही नहीं कर रहा वरन् प्राकृतिक रहन–सहन के विरुद्ध जाकर कृत्रिम सुविधाजनक संसार भी उसने बना लिया है। जो आज स्वयं उसके ही आनंद और सुख चौन के लिए खतरा बनता जा रहा है।

भारत की परंपरा में प्रकृति विजय का भाव नहीं रहा है बल्कि प्रकृति के संरक्षण और पोषण की परंपरा रही है। प्रकृति के विभिन्न उपादानों के संरक्षण में भारत के मनुष्यों ने अध्यात्म एवं धर्म को जोड़कर उसे चिरंजीवी बनाने का उपक्रम किया है । जैसे हमारे सभी देवताओं के वाहन चूहा, मोर ,बैल, हंस गुरुड़ आदि जीव जंतु है ।सर्प को शिव जी ने धारण किया है। यह सब इसलिए है कि भविष्य में इन प्रजातियों को मानव अपने स्वार्थ के लिए भी हानि न पहुंचा सके। हमने जल को अग्नि को वायु को पृथ्वी को देवता माना है, आकाश को सभी देव शक्तियों का निवास माना है। इस प्रकार प्रकृति के निर्माण के पांच तत्वों को पंच विनायक बनाकर उनके संयोजित प्रयोग की भूमिका प्रदान की। कहने का आशय यह है कि अध्यात्म ने भारतीय मानस में सभी प्राकृतिक उपादानों के संरक्षण की चेतना प्रवाहित की है ।

विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के लिए स्वार्थ को त्यागना होगा। वैश्वीकरण की इस आंधी से यदि कोई उबार सकता है तो वह है आध्यात्म। अध्यात्म का काम है काम, क्रोध, लोभ, मोह से मनुष्य को हटाकर उसे ज्ञान और ब्रह्म के विराट रूप से अवगत करवाना, ब्रह्म ज्ञान जब मनुष्य ग्रहण करेगा तो उसके द्वेष, अहंकार। आदि दोषों का लोप होगा। इससे हमारे स्वार्थ जनित सभी समस्याएं निदान पा सकेंगी।

शोध उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र में मनुष्य के जीवन में अध्यात्म की प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। साथ ही विज्ञान युक्त अध्यात्म मानव जीवन के लिए किस प्रकार उपयोगी है, का अध्ययन किया गया है।

शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र में शोध अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से तथ्य एकत्रित किए गए हैं। इसे हेतु विभिन्न पत्र पत्रिकाएं ,पुस्तकों, समाचार पत्रों, जनरल्स आदि का प्रयोग किया गया है।

विज्ञान और अध्यात्म – विज्ञान एवं अध्यात्म दोनों परस्पर पूरक हैं । विज्ञान के लिए अध्यात्म की एवं अध्यात्म के लिए विज्ञान का आधार आवश्यक है, क्योंकि यदि विज्ञान अध्यात्म अर्थात आदर्श, मूल्य एवं नैतिकता की उपेक्षा करता है तो केवल विज्ञान के ऊपर आधारित सभ्यता एवं विकास अंत में संपूर्ण विश्व को एवं मानव जाति को विनाश के गर्त में धकेल देता है। इसी प्रकार यदि अध्यात्म विज्ञान की उपेक्षा करके आध्यात्मिक मूल्यों आदर्शों की व्यवहारिक जामा नहीं पहनाता है उनके विकास के लिए उनकी सत्ता के लिए सशक्त आधार प्रदान नहीं करता तो कहीं तो कोरे अध्यात्म का कोई मूल्य नहीं है।

विज्ञान एवं अध्यात्म अन्योन्याश्रित है। एक के बिना दूसरे की गति नहीं। विज्ञान हमारे साधनों को बढ़ाता है एवं आध्यात्म आत्मा तक पहुंचाने का साधन है ।अध्यात्म अर्थात आत्मा को खोकर हमारे साधनों की मात्रा कितनी ही बड़ी चढ़ी क्यों न हो, परंतु इससे अर्थात भौतिक प्रगति से मनुष्य योगी ,व्यसनी अहंकारी एवं स्वार्थी ही बनेगा। महत्वाकांक्षाओं से मनुष्य नैतिक नहीं हो पता वरन उचित –अनुचित ,अच्छे– बुरे सारे मार्ग अपनाकर वह अपनी असीम इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को संतुष्ट करना चाहता है। अत: मनुष्य को यही अध्यात्म की आवश्यकता है, क्योंकि अध्यात्म मनुष्य की निरंकुश आशाओं, आकांक्षाओं को नियंत्रित एवं मर्यादित करके उचित दिशा की ओर ले जाता है ।वैज्ञानिक दृष्टि का अर्थ यह है कि मनुष्य मान्यताओं, पूर्वाग्रह एवं आस्थाओं की पराधीनता से ऊपर उठकर विवेक एवं बुद्धि के माध्यम से यथार्थ एवं सत्य को समझ सके, तथ्यों एवं प्रमाणों की कसौटी पर जो खरा उतरे उसी को अपनाना वस्तुत: सत्य की खोज है । इसे हटा देने पर अध्यात्म निष्प्राण ही नहीं भ्रमोत्पादक और भय संवर्धक बन जाता है । सत्य के प्रति हमारी निष्ठा ,श्रद्धा एवं विश्वास विवेकपूर्ण,

तर्कयुक्त एवं वैज्ञानिक होना चाहिए। बुद्धि एवं विवेक रहित परंपरावादी आग्रह एवं मान्यताएं अध्यात्म के मार्ग में बाधक है ।

यही मौलिक कारण है कि सभी विद्धान, विचारक एवं दार्शनिक दोनों की उन्नति पर बल देते हैं। वैज्ञानिक विकास के कारण ही आज मानव सर्व सुविधाओं को सरलता पूर्वक हासिल करता है एवं शेष बचे समय को आत्मिक ईश्वरीय एवं नैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु स्वयं को सक्षम महसूस करता है। विज्ञान मानव मात्र के अपेक्षित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की पूर्ति हेतु अनुकूल परिस्थितियों एवं सशक्त आधार प्रदान करता है । वैज्ञानिक प्रगति के कारण ही मनुष्य अपने घर बैठकर ही विश्व भर की जीवन के सभी क्षेत्रों की मनोवांछित जानकारियां एवं ज्ञान प्राप्त करता है। तथा उन्हें अपने करियर के निर्माण में तथा आवश्यकता अनुसार उनका उपयोग कर जीवन में मनचाही सफलताएं हासिल करता है। और जब वह भौतिक दृष्टि से पूर्णतया संतुष्ट एवं सुखी हो जाता है तब शेष समय को आध्यात्मिक साधना के पद पर ले जाता है । अत: विज्ञान आध्यात्मिक एवं आत्मिक विकास के लिए अत्यंत ठोस अनुकूल एवं सशक्त आधार प्रदान करता है ,इसलिए भारतीय संस्कृति में कहा गया है भूखे भजन न होय गोपाला, भूख मिटाना विज्ञान का कार्य है एवं भजन की ओर ले जाना अध्यात्म का काम है।

भारतीय संस्कृति और दर्शन के मूल में अध्यात्म है। वैश्वीकरण प्रौद्योगिकी और बाजार में समाज के सोचने के तरीके को प्रभावित किया है। मनुष्य और कठोर होता जा रहा है। चिंतन और उदारता उसके भीतर से खत्म होती जा रही है । जबकि उदारवादी मनुष्य चाहता था कि हर विचार, हर नीति, हर विश्वास को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर तौला जाए फिर उसे अपनाया जाए। आधुनिक मनुष्य हिंसक होता जा रहा है जबकि भारत में महात्मा गांधी ने अहिंसा के रास्ते आजादी की लड़ाई लड़ी और देश को अहिंसा की ताकत से अवगत कराया यह हिंसा का मार्ग ही अध्यात्म का मार्ग है । जिसमें संसार का भविष्य सुरक्षित है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि समाज में व्याप्त निराशा, हताशा, भ्रष्टाचार ,बलात्कार, शोषण का विज्ञान, साहित्य और अध्यात्म के माध्यम से समाधान पाया जा सकता है । प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के स्थान पर आध्यात्मिक प्रकृति, साहित्यिक प्रकृति और वैज्ञानिक प्रकृति को बचाने उसे समृद्ध बनाने उसके भीतर के जीव को परिभाषित करने पर बल देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. रामनाथ शर्मा, दर्शन मानव और समाज, पृ8
2. डॉ. जय प्रसाद शाक्य, भारतीय नीति शास्त्र, पृ 32
3. डॉ. हरेंद्र प्रसाद सिंह, भारतीय दर्शन की रूपरेखा ,पृ 58
4. डॉ. राजश्री अग्रवाल, दर्शन मानव और समाज, पृ 5

****